समाज में संवाद की श्रेष्ठ परंपरा के गौरव-शिखर कबीर

अमरेन्द्र कुमार आर्य

सारांश :- **कालजयी कबीर के संदेश में मानवता की चिरन्तन निधि हैं। समाज में आज सांस्कृतिक शून्यता है। इस शून्यता की खोज कबीर के मूल्यवादी और मानवतावादी दृष्टिकोण में निहित है। कबीर क्रांति के प्रतीक हैं। कबीर का विद्रोह सामाजिक अन्याय, विषमता, अतिचार तथा व्यवस्था की हताशा और धुरीहीन चरित्र के खिलाफ है। कबीर ने जिस एकता, धार्मिक सहिष्णुता और जनचेतना की बात कही वह भारतीय समाज की पुरानी व्यवस्था है। भारत की समावेशी संस्कृति कबीर की समाहारी जीवन दृष्टि में अभिव्यक्त हो रही है। इस शोध आलेख में समझने की कोशिश की गई है कि नवीन चुनौती का सामना करने के लिए कबीर की संचार दृष्टि कितनी प्रासंगिक है? उनके संदेशों का आज के युवकों के लिए क्या मायने हैं? इस युग में पैसा, बाजार और मशीन इन तीनों के खिलाफ संघर्ष में कबीर के विचार कितने समर्थ हैं।**

महत्वपूर्ण शब्द :- **कबीर, संचार, समाज-सुधार, संवाद, धर्म, सांप्रदायिकता, सद्भावना**

प्रस्तावना

कबीर-साहित्य में जहां दर्शन, अध्यात्म, ज्ञान, वैराग्य की गूढ़ता मिलती है, वहीं तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराईयों को समूल नष्ट करने का शंखनाद भी है। कबीर एक समाज सुधारक के साथ-साथ श्रेष्ठ जनसंचारक भी थे। कबीर ने समाज के पाखंड से उपजे आडम्बरों पर विशेष चोट की। उन्होंने समाज की रूढ़िवादी व्यवस्थाओं, कुप्रथाओं और गलत परम्पराओं पर निर्भीकता तथा निडरता के साथ कुठाराघात किया। समाज में व्याप्त कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए ताउम्र संघर्ष किया। उन्होंने अपने जीवन के हर एक क्षण को समाज सुधार की साधना में लगाया। अपनी इसी साधना और संचार कुशलता के बल पर कबीर ने कभी कवि और साधक तो कभी दार्शनिक बनकर समाज को एक नई दिशा और दृष्टि दी। कबीर के इन्हीं भगीरथी प्रयासों ने तत्कालीन भारतीय समाज को समरसता का पाठ पढ़ाया। सही मायनों में कबीर की सारस्वत साधना विराट मानवता की उपासना है।

कबीर का चितंन आज भी भारतीय समाज के जनजीवन के अंतर्मन में व्याप्त हैं। कबीर द्वारा स्थापित उच्च और श्रेष्ठ जीवनमूल्य समाज के लिए मानक है। कबीर के कालजयी विचार सदियों से सहज ही भारतीय जनमानस में संचरित होते रहे हैं। कबीर ने किसी भी तरह की औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, किंतु उनकी वाणियाँ इतनी सहज, श्रेष्ठ और सारगर्भित थी कि वह आज भी भारतीय समाज के लिए मननीय और अनुकरणीय हैं। कबीर के दोहों में सामाजिक सरोकार एवं राष्ट्रीय चेतना का स्वर अनुगुंजित होता है। कबीर जानते थे कि 'भाषा की क्लिष्ठता समाज के सभी वर्गों से संवाद स्थापित करने में बाधक हैं। वे मानते थे कि भाषा की क्लिष्ठता ज्ञान के प्रवाह को अवरुद्ध कर देती है। उस समय लोग अज्ञान के कारण कुरीतियों, अंधविश्वासों तथा धर्म के नाम पर अनैतिक कृत्यों में संलिप्त थे। समाज कई आधारहीन मान्यताओं के कारण वर्गों और सम्प्रदायों में विभक्त था, जिसे एकजुट करने में कबीर ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। वे अपने विचारों को बड़े तार्किक ढंग से सहज और सरल भाषा में प्रस्तुत करते थे। इस दृष्टि से कबीर एक जनसंचारक थे। उनमें जनसंचारक के सभी गुण मौजूद थे या यह कहे कि संचार संबंधी जो गुण कबीर में थे, वे ही एक कुशल संचारक में होने चाहिए। तर्क, युक्ति, विवेक, अनुसंधान, प्रयोग और परीक्षण के बिना किसी भी समाज का सम्यक, विकास नहीं हो सकता। मानव सभ्यता का विकास इन्हीं उपक्रमों से उपजे आत्मविश्वास पर खड़ा होकर आगे बढ़ा है। इन्हीं के आधार पर समाज शक्तिसंपन्न हुआ। 'समाज में चिंतन-अनुचिंतन और निरीक्षण-परीक्षण की समृद्ध परंपरा रही है। इसी के कारण अभी तक सही समझे जाने वाले सिद्धांतों को चुनौती दी जा सकी हैं और नये सिद्धांतों की रचना हो सकी है।' परंतु आज का मानव समाज सारे सिद्धांतों को परे रखकर तर्करहित समाज गढ़ने में लगा है। मानव समाज जहां एक ओर सभ्यता के नये आयाम को प्राप्त कर रहा हैं, वही दूसरी ओर आज जनसंचार माध्यमों के द्वारा मानवीय चेतना कुंठित भी हो रही है। अंधविश्वास, छुआछूत, लिंगभेद, भाषा तथा क्षेत्र के नाम पर भेदभाव आज भी समाज में व्याप्त है।

❐ **अतिथि अध्यापक, प्रबंधन विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल**

समाज में जनमाध्यमों की स्थापना का मूल उद्देश्य शांति प्रिय समाज का निर्माण था। काफी हद तक जन माध्यम अपने कार्य में सफल भी हुए है पर वर्तमान में बाजारवाद के जन माध्यमों में गहरी पैठ चेतनशील समाज को दृष्टिहीन बना रही है। वह अपने आर्थिक हितों के कारण दृष्टि-दिशाहीन समाज स्थापित करने में अपनी भूमिका निभा रहा है। अतः आज का कबीर संचार-बाजार में खड़ा है। कबीर शब्द अपने आप में एक व्यापक अर्थ समेटे हुए है। कबीर मात्र एक संत का ही नाम नहीं, यह सामाजिक चेतना का भी प्रतीक है। कबीर शब्द से जो छवि उभरती है वह किसी आन्दोलन को भी प्रतिबिंबित करती है। कबीर जनसंचार के पर्याय हैं। 'सूचना देना' और 'ज्ञान देना' दोनों में बड़ा ही अन्तर है। परन्तु आज हमारा बौद्धिक स्तर इतना गिर गया है कि इसका अंतर स्पष्ट नहीं हो पाता है। पुस्तकों से अर्जित ज्ञान वास्तव में सूचना मात्र है। जब तक उसमे लोककल्याण और लोकहित न हो, ज्ञान शब्द की परिभाषा पूर्ण नही होती। आज ऐसे ही ज्ञान को पाकर लोग, आतंकवाद और अलगाववाद की ओर उन्मुख हो रहे हैं। इस शोध आलेख में यह समझने की कोशिश की गई है कि नवीन चुनौती का सामना करने के लिए कबीर की संचार दृष्टि कितनी प्रासंगिक है? कबीर के संवादों की आज कितनी सार्थकता या उपयोगिता है? उनके संदेशों का आज के युवकों के लिए क्या मायने हैं? इस युग में पैसा, बाजार और मशीन इन तीनों के खिलाफ संघर्ष में कबीर के विचार कितने समर्थ हैं?

परिचय

पंद्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में देश में उथल-पुथल का वातावरण था। क्रांतिचेता कबीर ने सामाजिक चेतना जगाने के लिए काफी संघर्ष किया और अपने उपदेशों से समाज को बदलने का पूरा प्रयास किया। सांप्रदयिक भेद-भाव को समाप्त करने और जनता के बीच खुशहाली लाने के लिए कबीर अपने समय के प्रकाश स्तंभ साबित हुए। अनेक अन्तर्विरोध के युग में कबीर जन्मे थे। कबीर के व्यक्तित्व को सभी अन्तर्विरोधों ने प्रभावित किया किंतु उन्होंने समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया। 'परिस्थितिजन्य परिवेश की प्रतिकूलता में भी कबीर में निर्णय की अभूतपूर्व क्षमता थी। वह आत्मचिंतन से प्राप्त निष्कर्षों को कसौटी पर कसने में कुशल थे। प्रचलित धारणाओं के अनुसार, मस्तमौला कबीर संत रामानन्द जी के शिष्य थे।'

'कबीर की जन्मतिथि के संबंध में मतांतर हैं, पर अधिकतर लोग इस बात पर सहमत हैं कि विक्रम सम्वत् के अनुसार पन्द्रवीं शताब्दी के आसपास ही इनका जन्मकाल है।' जन्मस्थान के संबंध में भी मतांतर है। कोई काशी, कोई मगहर तथा कोई बलहरा गाँव (आजमगढ़) मानता है। "कबीर की रचनाओं को मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभक्त किया जाता है-

1. रमैनी, 2. सबद और 3. साखी। 'रमैनी' और 'सबद' गाए जानेवाले गीत या भजन के रूप में प्रचलित हैं।' 'साखी' शब्द साक्षी शब्द का अपभ्रंश है। इसका अर्थ है -'आँखों देखी अथवा भली प्रकार समझी हुई बात।' कबीर की साखियाँ दोहों में लिखी गई हैं जिनमें भक्ति व ज्ञानपरक उपदेश हैं। 'कबीर ने मानवतावादी तत्त्वग्राही व्यक्तित्व से मजहबी, वर्गगत अहंकार तथा आचार संहिता की जकड़न में उलझा देनेवाले तत्त्वों को भुलाकर त्याग दिया। कबीर नैतिकता से विकसित भगवत प्रेम में मानव कल्याण समझते हैं।' कबीर की दृष्टि में यही मानवता का मूल आधार है। कबीर जीवन का चरम लक्ष्य परमतत्त्व की प्राप्ति मानते हैं। इस तत्त्व को प्राप्त करने का प्रमुख साधन ज्ञान और प्रेम है। उनके अनुसार ज्ञान का तात्पर्य शास्त्र ज्ञान के अहंकार से मुक्त व्यक्ति के सहज ज्ञान से है। इस तरह प्रेम का सहज रूप ही उन्हें मान्य है। कबीर ने धर्म, अध्यात्म और दर्शन के समन्वय का संदेश दिया है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र के अध्ययन के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में कबीर की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
2. कबीर को समाज के जनसंचारक के रूप में ग्रहण करना।

पद्धति

इस शोधपत्र लिखने के लिए विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। इस शोध में द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है, जिसमें कबीर द्वारा रचित साहित्य और उसकी आलोचना समाहित है।

विश्लेषण - आधुनिक संदर्भ में कबीर

आज भी भारतीय समाज की वही स्थिति है, जो कबीर-काल में थी। सामाजिक आडंबर, भेद-भाव, ऊंच- नीच की भावना आज भी समाज में व्याप्त है। व्याभिचार और भ्रष्टाचार का बाजार गर्म है। आए दिन समाचार-पत्रों में हत्या, बालात्कार, डकैती, उत्पीड़न, लूट, अपहरण और आत्महत्या की खबरें छपती रहती हैं। देश के संतों, चिंतकों तथा बुद्धिजीवियों ने बराबर इस

बात की उद्घोषणा की है कि नीति-विहीन शासन कभी सफल नहीं हो सकता। नीति और सदाचार अध्यात्म की आधारशिला है। इसी से देश की उन्नति तथा सामाजिक सद्भावना उत्पन्न हो सकती है। आज हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को भूलकर पाश्चात्य चकाचौंध की ओर आकर्षित हो गए हैं। बाह्य आडंबर और शान-शौकत को ही जीवन का ध्येय मान लिया गया है। हम अपनी शालीनता, गरिमा तथा जीवन मूल्यों को भूल गए हैं, जिसका फल है, पतन, निराशा और दुःख। ऐसी नाजुक परिस्थिति से हमें कबीर का संवाद और उसके गहरे नैतिक सरोकार ही उबार सकते हैं।

जिन दिनों कबीर का आविर्भाव हुआ था, उन दिनों हिंदुओं में रूढ़िवादी परंपरा ही प्रबल थी। 'कोई वेद का दीवाना था, तो किसी को उसके प्रति नैराश्य था। कोई दान-पुण्य में लीन था तो कोई मदिरा के सेवन ही में सब कुछ पाना चाहता था। कोई तंत्र-मंत्र में विश्वास करता था तो कोई औषधि की करामात को अपनाए हुआ था। तब से लेकर आज तक कुछ सुधार के बावजूद भारतीय समाज की स्थिति में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं हुआ। देश में आज भी अलगाववाद से तनाव की स्थिति चिंतनीय है। देश में संप्रदाय के नाम पर लोगों को आपस में खूब लड़ाया जाता है। राजनैतिक दल एवं राजनेता स्वयं जातिवाद या सांप्रदायवाद के प्रतीक बन गए हैं। आज हर वर्ष देश के कुछ भागों में सांप्रदायिक दंगे का भड़क जाना और सैकड़ों बेगुनाहों का खून बह जाना, सामान्य बात हो गई है। प्रत्येक साल कही-न-कहीं दंगा होता रहता है। हजारों लोग हर दंगे में मारे जाते हैं। हजारों गिरफ्तारियां होती हैं। लाखों-करोड़ों की संपत्ति जला दी जाती है। यह सब आपसी धार्मिक मतभेदों की वजह से होता है। कालजयी कबीर के संदेश मानवता की चिरन्तन निधि हैं। आज सांस्कृतिक शून्यता है। इसका समाधान कबीर के मूल्यवादी और मानववादी दृष्टिकोणों में खोजे जा सकते हैं। मानव समाज अपने ऐतिहासिक सफर में आज सबसे अधिक कठिन दौर से गुजर रहा है। पैसा, बाजार और मशीन, जो उपभोगवाद और उपयोगितावाद के प्रतीक हैं, ये तीनों आज मनुष्य के जीवन मूल्यों, आदर्शों और मानवबोध को बड़ी तेजी से क्षरण की ओर ले जा रहे हैं। वे जीवनादर्श और भावनादर्श जो मनुष्यता की सुंगंध से सुवासित थे, न जाने कहां खो गए हैं। मानव के सुकुमार संबंध, उसके रागमय जीवन के तुहीन कण, उसके नन्हे-नन्हें सुख-दुख की अनेक कणिकायें आदि बातें व्यापारिक युग के बाजार में विक्रय की वस्तु बन गयी हैं। 'मानवीय संबंधों के प्रति समाज की एक पाषाणी तटस्थता मिलती है।' मूल्यवादी जीवन के लिए समाज में गहन उदासीनता व्याप्त है। समाज में अकल्पनीय असमानता हैं। सत्ता केन्द्रित होती शक्ति संरचना में राज्य और बाजार दोनों ने मिलकर मानव को कृतदास बना लिया है। यहां सब कुछ अमानवीय होता जा रहा है। सब कुछ मानव और उसकी स्वतंत्रता के खिलाफ हो रहा है। स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं है, पर हम यह न भूलें कि मानवीय चेतना सदा ही दासत्व के खिलाफ बगावत करती रही है। जीवन के गंभीरतम उतार-चढ़ाव के बीच वह अपने को ढालती रही है। क्रांति का स्वरूप भिन्न हो सकता है पर उसका जो मर्म है वह एक है। कबीर क्रांति के प्रतीक हैं। कबीर का विद्रोह सामाजिक अन्याय, विषमता, अतिचार तथा व्यवस्था की हताशा और धुरीहीन चरित्र के खिलाफ है।

कबीर ने जिस एकता, धार्मिक सहिष्णुता और लोक चेतना की बात कही, वह भारतीय समाज की पुरानी व्यवस्था है। भारत की समावेशी संस्कृति कबीर की समाहारी जीवन दृष्टि में अभिव्यक्त हो रही है। 'सांस्कृतिक और धार्मिक सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की अपनी विशेषता है। उन्मुक्त जीवन चेतना और विराट् मानववाद आरण्यक संस्कृति की पहचान है।' और यही कबीरीय चेतना का भी परिचय है। इन्हीं तत्वों को हम संचारीय जीवन में प्रतिफलित पाते हैं। राष्ट्रीय और प्रादेशिक जीवन से लेकर आंचलिक जीवन तक, कबीर की वाणी के प्रसार को हम देखते हैं। उसके पास जनव्यक्तित्व था। वे जनसंचारक बनकर मार्गप्रदर्शक बने थे। वे सही अर्थों में जननायक थे। वे जननायक बनकर जन के पास नहीं गए थे। उसका यह जन व्यक्तित्व उसकी अपार जनसंचारक शक्ति का आधार था। सबसे बड़ी बात यह है कि उन्हें अपने जन होने का गर्व था। कहीं भी आत्महीनता का भाव नहीं वरन महाप्राणता का औदात्य है। जीवन का जहर उन्होंने पिया था। वे बहुत संजीदा हो उठे थे। इसलिए भारत की अस्मिता का प्रतीक बन गए।

समाज में व्याप्त हर प्रकार की विषमताओं को समाप्त करने और एक न्यायोचित संतुलित व्यवस्था को कायम करने के उद्देश्य से कबीर संघर्ष करते रहे। उनके अनुसार समानता की स्थापना हर स्तर पर होनी चाहिए। वे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता के पक्षधर थे। इसी समानता की स्थापना के लिए कबीर अपना साम्यवाद देते है जो प्लेटो के साम्यवाद और मार्क्स के साम्यवाद से सर्वथा भिन्न है। कबीर का साम्यवाद, मूल्यवाद और मानववाद पर आधारित है। कबीर के साम्यवाद से सामाजिक दायित्व-बोध, पारस्परिक सहयोग, सामाजिक समानता

आदि बातों की वृद्धि होती है। उनके चितंन से व्यक्ति और समाज के बीच टकराहट व तनावपूर्ण संबंध निर्मित नहीं होते वरन सौहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित होता है। 'व्यक्ति अपने निजी जीवन से अधिक सामाजिक जीवन में जीना चाहता है।' उसी में अपने जीवन की पूर्णता एवं सुख मानता है। जहां व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं, लोभ नहीं, वहां सामूहिक रूप से सभी एक-दूसरे की मदद करते हैं, और दुःख-कठिनाइयों को दूर करते हैं।

विद्रोही कबीर

बाह्याडम्बरों, पूजा-पाठ, जप, तीर्थ, गंगास्नान आदि का कबीर ने जमकर विरोध किया। सीधे सरल और सहज तर्कों के माध्यम से उन्होंने इनपर आघात किया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनके व्यंग्यकार व्यक्तित्व को सटीक ढंग से व्याख्यायित किया। इनके व्यंग्य तत्कालीन सामंती समाज व्यवस्था पर तीखी चोट करते हैं। तंगदिल वैभिन्य पैदा करने वाले पागलों से स्पष्ट सवाल किया-

दुई जगदीश कहाँ से आये, कहु कोने भरमाया ,
अल्लाह राम करीम, केशव, हरि हजरत नाम धराया।

इन बातों का कोई जवाब तत्कालीन सामंती शासक वर्ग के पास नहीं था। कबीर का यह विद्रोह मूल्यहीन विद्रोह नहीं था, वरन निर्मल हृदय संतकवि के हृदय के सहज उद्‌गार थे।

आध्यात्मिक कबीर

'कबीर पारंपरिक शास्त्रीयतावादी चिंतन, माया, जीव, ब्रह्म, जगत आदि से अत्यधिक प्रभावित रहे। यही वजह है की वे ऊंचाई को संस्पर्श करते हुए सर्वब्रह्म के ज्ञान की ओर मुड़ते हैं। ऐसा ब्रह्म जो किसी दार्शनिक विचारधारा से आबद्ध न होकर स्वानुभूतिपरक ही अधिक है, कहीं-कहीं वे सगुण व्यक्त ब्रह्म को भी स्वीकार करते हैं, पर ब्रह्म का सूक्ष्म रूप ही उनको ग्राह्य है जो भावनामूलक इन्द्रियातीत है।' गुरु से प्रेम का मंत्र ग्रहण करके ही वे भाव-साधना द्वारा भक्ति-साधना की ओर उन्मुख हुए। तन्मयावस्था को प्राप्त करने के लिए निरन्तर सुपथ की खोज में रत रहे। परम त्याग ही इस अवस्था का अधिकारी बनाता है -

सीस उतारि पगतलि धरै, तब चखै प्रेम का स्वाद।

कबीर एक लोकजीवक

कबीर स्थानीय भाषा और रूपकों के माध्यम से अपनी बात को जनता के मर्म तक उतारने में सिद्धहस्त थे। निश्चित ही वे 'शास्त्रीय कोटि के आचार्य न होकर जनता के आचार्य' थे। कदाचित इसी कारण आचार्य शुक्ल ने उनको कवि की कोटि में नहीं रखा। लेकिन बार-बार वे निर्गुणपन्थी सन्त-महात्माओं के उपकार को सराहते रहे कि इन कवियों ने उच्च विषयों का कुछ आभास देकर आचरण की शुद्धता पर बल देकर बाह्याडम्बरों को नकारकर निम्न जाति के लोगों में आत्मगौरव का भाव जगाया।

कबीर की कार्य संस्कृति

कबीर निर्गुणोपासक थे। उन्होंने राम के गुणातीत, अगम्य, अगोचर, निरंजन ब्रह्म का वर्णन किया है। मानना होगा कि भक्ति आन्दोलन के सुधारवादी भक्त कवियों में कबीर का अपना अलग ही स्थान व नाम है। 'भगवा वस्त्र पहन कर जंगलों की खाक छानने के पक्ष में कबीर नहीं थे।' उन्होंने धर्म एवं भक्ति में दिखावे को त्याग, तीर्थाटन, मूर्तिपूजा आदि को धर्म परिधि से बाहर रखा। कबीर का दृष्टिकोण सुधारवादी ही रहा।

कबीर- व्यवहार

समाज में व्यवहार के स्तर पर भेद-भाव और भिन्नता रहने के कारण सांप्रदायिक कटुता बराबर बनी रहती थी। कबीर दास इसी कटुता को मिटाकर भाईचारे की भावना का प्रसार करना चाहते थे। उन्होंने जोरदार शब्दों में यह घोषणा की कि राम और रहीम में जरा भी अंतर नहीं है। कबीर ने अल्लाह और राम दोनों को एक मानकर उनकी वंदना की है, जिससे यह सिद्ध होता है कि उन्होंने अध्यात्म के इस चरम शिखर की अनुभूति कर ली थी, जहाँ सभी भिन्नता, विरोध- अवरोध तथा समग्र द्वैत-अद्वैत एक भाव में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। अल्लाह और राम की इसी अद्वैत, अभेद और अभिन्न भूमिका की अनुमति के माध्यम से उन्होंने हिंदु-मुसलमान दोनों को गलत कार्य पर चलने के लिए वर्जित किया और लगातार फटकार लगाई।

ना जाने तेरा साहब कैसा है,
मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारे, क्या साहब तेरा बहिरा है,
पंडित होय के आसन मारे लंबी माला जपता है।
अंतर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहब लखता है।

कबीर की शब्द- साधना

कबीर शब्दों को साधने पर अधिक जोर देते है। इनका कथन है, तुम श्रम तजकर शब्द साधना करो और अमृत रस का पान करो, हम तुम में कोई भेद नहीं हैं, हम दोनों इसी एक पिता की

संतान हैं। इसी अर्थ में कबीर दास हिंदू और मुसलमान के स्वयं विधायक हैं।

कबीर एक जनसंचारक

कबीर किसी भी स्थिति में हार मानने वाले नहीं थे। वे गलत लोगों को ठीक रास्ते पर लाना चाहते थे। इसके लिए उन्हें दो-चार धक्के खाना भी पसंद था। इस प्रकार कहा जाता है कि कबीर लौह पुरुष थे। वे मानव से प्रेम को अपनाने का आग्रह करते हैं। उनका कहना है कि ईश्वर का दूसरा नाम प्रेम है। इसी तत्व को अपनाने पर जीवन की बहुत सारी समस्याएँ स्वतः सुलझ जाती है। कबीर साहब सदा सीधे ढ़ग से जीवन जीने की कला बताते थे। उनका कहना था कि प्रेम के अभाव में यह जीवन नारकीय बन जाता है। यही प्रेम सब कुछ है, जिसका पान कर कबीर धन्य हो गए। वे कहते हैं कि प्रेम ही सबकुछ है। उसी के आधार पर व्यक्ति एक दूसरे के साथ बंधुत्व की भावना को जागृत कर सकता है। आज के परिवेश में इसी बंधुत्व की भावना के प्रसार की नितांत आवश्यकता है। कबीर की वाणी आज भी हमें संदेश दे रही है कि संसार में कामयाब होने का एक मात्र मार्ग मानव धर्म है।

कबीर साहित्य

साहित्य समाज और देश को सुचारू रूप से नेतृत्व प्रदान करने वाले विचारों, भावनाओं और शिक्षाओं की गठरी है। उसमें अनमोल मोती गुंथे हैं। उन्होंने मानव जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श किया है। अतः आज की स्थिति में कबीर साहित्य हमारा मार्गदर्शन करने में पूर्ण रुप से सक्षम है। आधुनिक संदर्भ में कबीर का उपदेश सभी दृष्टियों से प्रासंगिक है। जिस ज्ञान और अध्यात्म की चर्चा आज के चिंतक कर रहे हैं, वही उद्घोषणा कबीर ने पंद्रहवीं शताब्दी में की थी। आज भी कबीर साहित्य की सार्थकता और प्रासंगिकता बनी हुई है। आज जरुरी है कि इसका प्रसार किया जाए, ताकि समाज के लोग लाभांवित हो सके।

समाज में सम्प्रदायिकता का दंश जब समाज को डस रहा हैं तो इसके बचाव में कबीर हमें अनायास ही याद आते है। वे धर्म के आधार पर बढ़ रहे रूढ़िग्रस्त विचारों की आलोचना करते है। कबीर ने अपनी सहज अभिव्यक्ति में इस्लाम में व्याप्त अंधविचारों पर समाज को समझाते हुए कहा।

कंकर-पत्थर जोरि कर, मस्जिद लई बनाये।
ता चढ़ मुल्ला बांग दे, क्या बहरा भया खुदाय।।

उन्होंने न केवल इस्लाम के प्रवर्तकों पर निशाना साधा बल्कि सनातनधर्मियों के जड़ में गहरी पैठ बनाये अंधविश्वासों पर भी चोट की। धर्म के क्षेत्र में आडम्बरों का कबीर ने खुला विरोध किया।

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार।
ताते तो चाकी भली, पीस खाय संसार।।

सत्ता अभिमुख भक्ति आन्दोलन के दौर में कबीर ने पहले से निश्चित पथ से अलग हटकर सुधारवादी रवैया अपनाकर एक जनसंचारक की भूमिका निभायी। उन्होंने धर्म एवं दर्शन की पताका सामाजिक समरसता से लहराने का आग्रह किया है। उन्होंने तो धर्म और दर्शन को मानवीय तत्त्वों से जोर कर ही अपना संदेश दिया। धर्म में सुधार के नाम पर कबीर ने जनता को उलझाया नहीं, उन्होंने तो खण्डन कर उलझनों से दूर रखा। जनमानस को अभेद की ओर प्रेरित कर भ्रम-माया से दूर रहने की प्रेरणा दी, इसीलिए कबीर मानवतावादी सुधारक माने जाते हैं।

कबीर का समाज-दर्शन

सामाजिक-सांस्कृतिक धरातल पर अपनी वाणियों के माध्यम से विशाल जनसमूह को एकजुट करने का विराट प्रयत्न कबीर ने किया। उनकी वाणी की संघर्षशील चेतना और प्रखर विद्रोही तेवर आज के अन्तर्विरोधी माहौल में भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने जो कुछ भोगा उसमें केवल निज के अन्तर्विरोध को ही नहीं पहचाना वरन अपने निजी अनुभवों के आलोक में व्यापक लोक से रिश्ता कायम किया। इस प्रकार मानव-मात्र की एकता के पक्षधर कबीर ने समस्त जातिगत, साम्प्रदायिक विभेदों का खण्डन कर मनुष्य को मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठा दी।

जाँति-पाँति पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।

निष्कर्ष

कबीर मध्यकाल के क्रांतिपुरुष थे। उन्होंने देश के अंदर और बाहर की परिस्थितियों पर एक ही साथ धावा बोलकर, समाज और भावलोक को जो प्रेरणा दी, उसे न तो इतिहास भुला सकता है और न ही साहित्य। उन्होंने रुढ़ियों पर जिस साहस और शक्ति से प्रहार किया, यह देखते ही बनता है। महात्मा कबीर दास ने पीड़ित जनता के दुख- दर्द को दूर करने के लिए 'राम रसायन' का आविष्कार किया। कबीर साहब ने पहली बार जनता को उसकी विफलता में ही खुश रहने का संदेश दिया। कबीर ने समाज की दुर्बलता और अधोगति को बड़ी करुणा से देखकर, उसे ऊपर उठाने के मौलिक प्रयत्न किया। उन्होंने भय, भर्त्सना और भक्ति जैसे

अस्त्रों का उपयोग राजनैतिक विभिषिकाओं और सामाजिक विषमताओं जैसे शत्रु को परास्त करने के लिए किया। कबीर यह बात समझ चुके थे कि इन शत्रुओं के विनाश होने पर ही जनता का त्राण मिल सकता है। अतः उनका सारा विरोध असत्य, हिंसा और दुराग्रह से था। उनका उद्देश्य जीवन के प्रति आशा पैदा करना था। वह कहते हैं, सारे अनर्थों की जड़, असत्य और अन्याय है, इनका निर्मूल होने पर ही शुभ की कल्पना की जा सकती है। इसी अध्यात्म का सहारा लेकर उन्होने हिंदू- मुस्लिम के भेद- भाव को मिटाने का प्रयत्न किया था, इसके साथ-साथ ही उन्होंने अपने नीतिपरक पदों के द्वारा जनता का मनोबल बढ़ाने का प्रयत्न किया था। आज के परिवेश में भी इन्हीं उपायों की आवश्यकता है। सांप्रदायिक मतभेदों या दंगों का कारण अज्ञान या नासमझी है। इस नासमझी या अज्ञान को दूर करने के लिए कबीर द्वारा बताए गए उपायों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। कबीर की वाणी ही समस्त समस्याओं का निवारण करने में समर्थ है। उन्होंने समाज में ऊंच-नीच का भेद मिटाकर सबको एक समान रूप से व्यवहार करने की सीख दी। आज के संदर्भ में भी इसी की जरुरत है। वर्तमान समस्याएं चाहे सांप्रदायिक हो चाहे वैयक्तिक, सबका समुचित समाधान नैतिक मूल्य प्रस्तुत करते हैं।

गुप्त प्रगट है एकै दुधा, काको कहिए वामन- शुद्रा
झूठो गर्व भूलो मति कोई, हिंदू तुरुक झूठ कुल दोई।।

संदर्भ-

1. दिनकर,रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, उदयांचल, राजेन्द्र नगर,पटना- 4
2. अग्रवाल,एम.के, सालिक राम, संत कबीर और कबीर पंथ, ओम प्रकाशन, रायपुर-1997.
3. एल्विन वेरियर, मिथ्स आफ मिडिल इंडियन, पुर्नमुद्रण वन्या प्रकाशन, भोपाल-1981.
4. चंद्र, सतीश, मध्यकालीन भारत, राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली-1898.
5. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी-1888.
6. शर्मा, डॉ.अशोक कुमार, संचार क्रांति और हिन्दी पत्रकारिता, विश्ध्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-2010
7. तिवारी, डॉ. अर्जुन तिवारी, सम्पूर्ण पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी- 2010
8. पाण्डेय, डॉ. आलोक, संपादक, साहित्य, पत्रकारिता और संस्कृति,नयी किताब, दिल्ली-2011
9. सम्मेलन पत्रिका विशेषांक, कला और लोक संस्कृति, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग- 1972
10. दुबे, डॉ. श्यामाचरण, मानव और संस्कृति, सांस्कृतिक मानव विज्ञान की परिचयात्मक पुस्तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 1982.